देश के सबसे जनप्रिय कवि बाबा नागार्जुन नहीं रहे । नागार्जुन की कविता में स्वातंत्र्योत्तर भारत की मेहनतकश जनता का हर्ष-विषाद, सुख-दुख और आशा-आकांक्षाएं अभिव्यक्त हुई हैं । बाबा नागार्जुन अपने समकालीनों में अकेले ऐसे कवि हैं जिन्होंने बच्चों पर सर्वाधिक कविताएं लिखीं । यदि कोई उनकी ऐसी कविताओं का संकलन करे तो वह अत्यंत महत्वपूर्ण और दिलचस्प काम होगा । यहां बाबा को श्रद्धांजलि स्वरूप उनकी ऐसी ही एक कविता प्रकाशित कर रहे हैं ।

बाघ आया उस रात

❑ **बाबा नागार्जुन**

वो इधर से निकला
उधर चला गया ऽऽ''
वो आंखें फैलाकर
बतला रहा था :
''हां बाबा, बाघ आया उस रात,
आप, रात को बाहर न निकलो !
जाने कब बाघ फिर से आ जाये !''

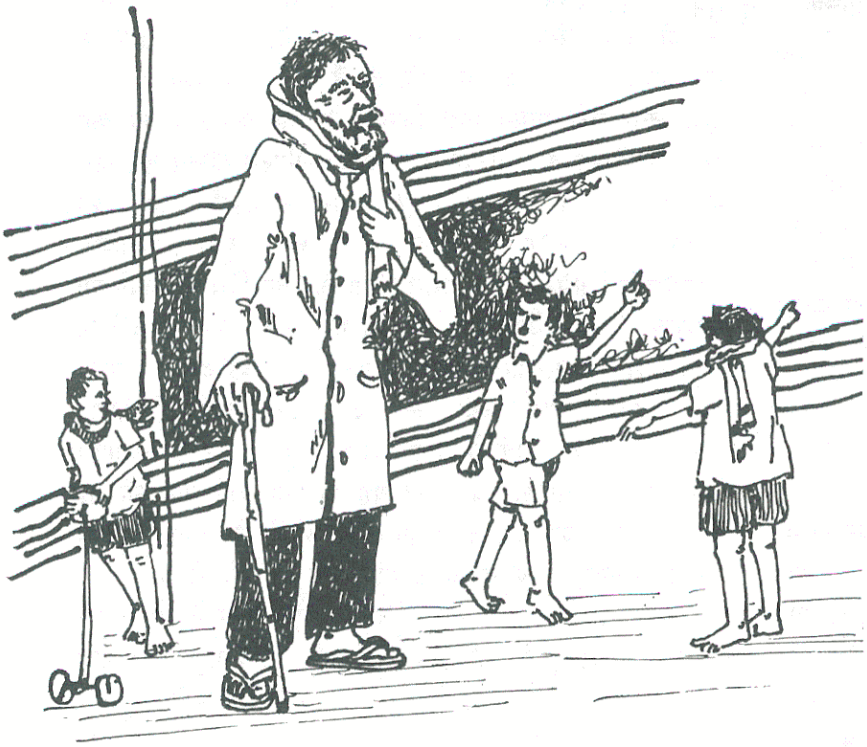

हा वा हा ।। ! वा हा जा
इस झरना के पास रहता है
वहां अपन दिन के वक्त
गये थे न एक रोज :
बाघ उधर ही तो रहता है !
बाबा, उस के दो बच्चे हैं
बाघिन सारा दिन पहरा देती है
बाघ या तो सोता है
या बच्चों से खेलता है .....''

दूसरा बालक बोला -
''बाघ कहीं काम नहीं करता
न किसी दफ्तर में
न कॉलेज में ऽऽ ''
छोटू बोला
''स्कूल में भी नहीं ...''
पांच-साला बेटू ने
हमें फिर से आगाह किया
''अब रात को बाहर होकर बाथरूम न जाना !''